जहां माता पिता की सेवा होती है वहां भगवान पंढरीनाथ खड़े रहते हैं-वंदना श्री

कृष्ण जन्म में जम के झूमे श्रद्धालु

देवास, निप्र। जिसने सृष्टि को रचा है वही सृष्टि चला रहा है। विज्ञान भौतिक तत्वों का विकास कर सकता है। सृष्टि का संचालन नहीं कर सकता। ईश्वर द्वारा रची गई सृष्टि के जब भी नियम बदलने की कोशिश की गई तब तब पृथ्वी पर विनाश ही हुआ है। चाहे वह भूकंप हो, बाढ़ हो, भूस्खलन हो या कोविड जैसी बीमारी हो। सृष्टि के रचनाकार द्वारा बनाए गए नियम के आगे विज्ञान नगण्य है। अध्यात्म ही ईश्वर के नियम को समझ सकता है, विज्ञान नहीं। उसकी रचना के आगे विज्ञान अंशभर भी नहीं है। ईश्वर के प्रति निष्ठा और माता पिता के प्रति सेवा और श्रद्धा का भाव रखने वाला ही ठाकुरजी की भक्ति का सच्चा अधिकारी बन सकता है। भक्त पंढरी ने माता पिता की सेवा को ही नारायण की भक्ति माना तब भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी ऐसे भक्त के दर्शन के लिए मृत्यु लोक में आए। भक्त के कहने पर भगवान विष्णु एक ईट पर खड़े रहे। जहां माता पिता की सेवा होती है वहां भगवान पंढरीनाथ स्वयं खड़े रहते हैं। यह भक्तिमय भाव मिश्रीलाल नगर में चैत्री नवरात्रि के पर्व पर कैलादेवी में हो रही श्रीमद भागवत के चौथे दिवस बृजरत्ना वंदना श्री ने व्यक्त करते हुए कहे। कथा प्रसंग में भक्त प्रहलाद की कथा का इतना सुंदर चित्रण हुआ कि श्रोतागण स्तब्ध रह गए जब मंच पर कथा के संवादों के साथ नरसिंह भगवान का महारौद्र स्वरूप देखा, जब हिरण्याकश्यप के प्राण हरे और भक्त प्रहलाद की भक्ति का प्रभाव सदृश्य दिखाया गया तो श्रोता भाव विभोर हो गए। प्रभु राम के जन्म की कथा का वर्णन के पश्चात भगवान कृष्ण के जन्म के वर्णन में बृज के कलाकारों ने इतनी सुंदर प्रस्तुतियां दी कि श्रोतागण रस में डूबने लगे और भगवान कृष्ण की सुंदर झांकियां देखकर झूमने लगे। कथा में बतौर अतिथि अखण्ड धाम के चैतन्य स्वरूप जी महाराज सहित संतो का आगमन हुआ। सनातन मंच के नवीन नाहर,

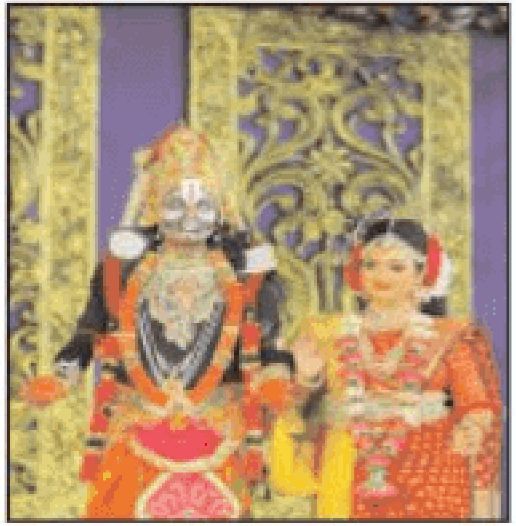

पी.एन.तिवारी, जितेन्द्र वर्मा, प्रशांत शर्मा, अजबसिंह ठाकुर, पतंजलि के मोहनलाल शर्मा, इंदौर के पूर्व पार्षद गणेश गोयल, महेन्द्र अग्रवाल, मुकेश अग्रवाल, हरीश अग्रवाल, अंकेश सिंघल, सचिन गर्ग, सुदामा शर्मा, समाज सेवी सुधा भारती, राष्ट्रीय कवि देवकृष्ण व्यास आदि उपस्थित थे।व्यासपीठ की पूजा दीपक गर्ग एवं परिवार ने की। संचालन चेतन उपाध्याय ने किया।